



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
	३-४-२५		

The Tribune

Scientists, farmers mull natural farming

TRIBUNE NEWS SERVICE

HISAR, APRIL 2

A seminar for agricultural scientists and farmers was organised at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University (HAU) here today.

Vice-Chancellor of the university, Prof BR Kamboj, presided over the seminar, which was also attended by CP Ahuja, a former member of management board, apart from Sharad Batra and Shivang Batra. Progressive farmers from different districts, who are engaged in natural farming, also participated in the seminar.

Highlighting the expansion of natural farming and its importance in the modern era, the Vice-Chancellor said the main objective of the scientist-farmer discussion seminar was to know the problems of farmers engaged in natural farming, solve them and make the research work in accordance with the requirement of the farming.

The Vice-Chancellor said in order to get better prices for the products, farmers should engage in natural farming. He also stressed on creating special courses to promote natural farming, organising more training sessions and exhibitions of agricultural models



Agri-scientists and farmers at HAU in Hisar on Tuesday. TRIBUNE PHOTO

prepared by the farming community. He urged the farmers to create a WhatsApp group through which they could share their problems, get solutions that could immediately benefit them and it would also help in exchanging new technologies.

He said providing chemical-free and nutrient-rich foods to future generations was the main priority of scientists and farmers. "Farmers should initially adopt natural farming in a small area and gradually increase the area," he said, adding that the scientists need to keep in mind the problems faced in the modern era whenever

they do research, considering various natural resources, availability and quality of water, availability of workers, rainfall, organic carbon of the soil, weeds, crop cycle throughout the year.

Dr Anil Kumar, Director of HAU's Pandit Deendayal Upadhyay Centre of Excellence in Organic Farming, shared information about the ongoing experiments on various subjects. He also answered the questions asked by farmers. He added that the agriculture scientists had also been carrying out research on various fruits and vegetables related to natural farming.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
The Saverा Times	03.04.2024	--	--

Seminar rolls out to promote natural farming in Hisar agriculture

@TheSaverाTimes

Network

Hisar: Scientist-farmer discussion seminar was organized at Chaudhary Charan Singh Haryana Agricultural University. Vice Chancellor of the University Prof. B.R. Kamboj presided over this meeting. In this meeting, former member of the management board C.P. Ahuja, Sharad Batra and Shivang Batra were also present. Progressive farmers from different districts doing natural farming participated in the program. Vice Chancellor Prof. B.R. Kamboj highlighted the expansion of natural farming and its importance in the modern



era. He said that the main objective of the scientist-farmer discussion seminar is to know the problems of the farmers doing natural farming, solve them and make the research work according to them. The Vice Chancellor said that in order

to get better prices for the products of farmers doing natural farming, it is necessary to create harmony and trust among the consumers by directly connecting with them. He also stressed on creating special courses to promote

Progressive farmers from different districts doing natural farming participated in the program

natural farming, organizing more and more trainings and organizing exhibitions of agricultural models prepared by the farming community. Farmers doing natural farming should create a WhatsApp group in which they can share their problems and solutions so that they can immediately benefit each other and also exchange technologies among themselves. He said

that providing chemical-free and nutrient-rich foods to future generations is the main priority of scientists and farmers. For this, he said that farmers should initially adopt natural farming in a small area and gradually increase their area.

He called upon the scientists to keep in mind the problems faced in the modern era whenever they do research, considering various natural resources, availability and quality of water, availability of workers, rainfall, organic carbon of the soil, weeds, crop cycle throughout the year. Be sure to brainstorm on issues related to the management of pests and diseases.



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि·भी	३. ५. २५	१२	२-५

हकूमि में वैज्ञानिक-किसान विचार-विमर्श संगोष्ठी का आयोजन

भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त भोजन उपलब्ध करवाना प्राथमिकता : प्रो. काम्बोज

- प्राकृतिक खेती कर रहे विभिन्न जिलों के प्रगतिशील किसानों ने लिया हिस्सा

हरिगूरि न्यूज ► हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने इस मीटिंग की अध्यक्षता की। इस मीटिंग में प्रबंधन मंडल के भूतपूर्व सदस्य सीपी आहुजा, शरद बतरा व शिवांग बतरा भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती कर रहे विभिन्न जिलों के प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

कलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने आधुनिक युग में प्राकृतिक खेती के विस्तार से लेकर उसकी महत्वता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की समस्याओं को जानकर उनका हल करना व शोध कार्यों को उनके अनुरूप बनाना है। कुलपति ने प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को बहतर मूल्य दिलवाने के लिए उपयोगिताओं से सामंजस्य व सीधे तौर पर जुड़कर आपस में विश्वास पैदा करना जरूरी है। उन्होंने प्राकृतिक खेती को



हिसार। वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज।

बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से पाठ्यक्रम बनाना, अधिक से अधिक प्रशिक्षणों का आयोजन व कृषक समुदाय द्वारा तैयार किए गए कृषि मॉडल की प्रदर्शनी भी लगाने पर जोर दिया।

उन्होंने बताया कि भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त व पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाना वैज्ञानिकों व किसानों की मुख्य प्राथमिकता है। इसके लिए उन्होंने कहा कि किसान शुरूआत में कम जगह पर प्राकृतिक खेती को अपनाएं और धीरे धीरे उसका क्षेत्रफल बढ़ाते जाएं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आहान किया वे

आधुनिक युग में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए जब भी शोध करें तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, पानी की उपलब्धता तथा गुणवत्ता, श्रमिकों की उपलब्धता, वर्षा, जमीन का आर्गेनिक कार्बन, खरपतवार, पूरे साल का फसल चक्र, कीट तथा बीमारियों के प्रबंधन संबंधित बातों पर मंथन जरूर करें।

ये रहे उपरिथित

इस अवसर पर अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. राजेश कुमार गोरा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य सहित सहायक

किसानों के सवालों के दिए जवाब

हकूमि में स्थापित पडित दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र के विदेशक डॉ. अनिल कुमार ने विभिन्न विषयों पर चर रहे प्रयोगों के बारे में जानकारियां साझा की। साथ ही किसानों के सवालों के जवाब भी दिए। प्राकृतिक खेती के तहत विभिन्न फलों पर सविजयों पर शोध किए जा रहे हैं। अनुसंधानों के उत्तित परिणामों को किसानों तक पहुंचाया जा रहा है, जिससे वे प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए अधिक से अधिक जागरूक हों। संगोष्ठी में किसानों का यह मत था कि प्राकृतिक खेती के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया को सरल बनाया जाए।

निदेशक डॉ. सुरेन्द्र यादव, संयुक्त निदेशक डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. सुमित देशवाल, डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. दीपिका, मंजीत सहित प्रगतिशील किसान जिनमें सुधीर महता, सुभाष बेनीवाल, कमल वीर, पंकज माचरा, मुल्कराज चावला, सुरेन्द्र कुमार, राजेन्द्र कुमार, रणधीर सिंह, मनोज कुमार, सुरजभान, धर्मवीर पूनिया, सुरजीत सिंह, नरेश कुमार, अमनदीप, वरेन्द्र कुमार, कृष्ण, दलजीत सिंह, गौरव तनेजा, मुकेश कबीज, आशीष महता, डॉ. बलविंदर सिंह, संजय व दिलेर भी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्बन्धित पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	३-५-२२	५	५-८

एचएयू में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिक-किसान विचार-विमर्श संगोष्ठी आयोजित रसायन मुक्त भोजन उपलब्ध करवाना प्राथमिकता : प्रो. काम्बोज

भास्कर न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-किसान विचार-विमर्श संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने इस मीटिंग की अध्यक्षता की। इस मीटिंग में प्रबंधन मंडल के भूतपूर्व सदस्य सीपी आहुजा, शरद बतरा व शिवांग बतरा भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती कर रहे विभिन्न जिलों के प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने आधुनिक युग में प्राकृतिक खेती के विस्तार से लेकर उसकी महत्वता और प्रकाश डाला। उन्होंने कहा वैज्ञानिक-किसान विचार-विमर्श संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक



खेती कर रहे किसानों की समस्याओं को जानकर उनका हल करना व शोध कार्यों को उनके अनुरूप बनाना है। कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलवाने के लिए उपभोक्ताओं से सामंजस्य व सीधे तौर पर जुड़कर आपस में विश्वस पैदा करना जरूरी है। उन्होंने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के

लिए विशेष रूप से पाठ्यक्रम बनाना, अधिक से अधिक प्रशिक्षणों का आयोजन व कृषक समुदाय द्वारा तैयार किए गए कृषि मॉडल की प्रदर्शनी भी लगाने पर जोर दिया।

उन्होंने बताया कि भावी पीड़ियों को रसायन मुक्त व पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाना वैज्ञानिकों व किसानों की मध्य प्राथमिकता है। इसके लिए

उन्होंने कहा कि किसान शुरुआत में कम जगह पर प्राकृतिक खेती को अपनाए और धीरे-धीरे उसका क्षेत्रफल बढ़ाते जाएं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया वे आधुनिक युग में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए जब भी शोध करें तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, पानी की उपलब्धता और गुणवत्ता, श्रमिकों की उपलब्धता, वर्षा, जमीन का आरोग्यिक कार्बन, खरपतवार, पूरे साल का फसल चक्र, कीट तथा बीमारियों के प्रबंधन संबंधित बारों पर मंथन जरूर करें।

हक्किय में स्थापित पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र के निदेशक डॉ. अनिल कुमार ने विभिन्न विषयों पर चल रहे प्रयोगों के बारे में उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाप्ति पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
कृषि विभिन्न संगोष्ठी के बदलाव के लिए सम्बोधित करने के लिए अप्रैल 2010 का बदलाव	३०.५.१०	१०	३-६

हकृति में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए संगोष्ठी

रसायन मुक्त भोजन उपलब्ध करवाना प्राथमिकता : काम्बोज

हिसार, 2 अप्रैल (हजा)

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने संगोष्ठी की अध्यक्षता की। इसमें प्रबंधन मंडल के भूतपूर्व सदस्य सी.पी. आहुजा, शरद बतरा व शिवांग बतरा भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती कर रहे विभिन्न किलों के प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने आधुनिक युग में प्राकृतिक खेती के विस्तार से लेकर उसकी महत्ता पर प्रकाश डाला।

उन्होंने बताया कि भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त व पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाना वैज्ञानिकों व किसानों की मुख्य प्राथमिकता है। इसके लिए उन्होंने कहा कि किसान शुरुआत में कम



हिसार में मंगलवार को वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज। -हप्र

जगह पर प्राकृतिक खेती को अपनाएं और धीरे-धीरे उसका क्षेत्रफल बढ़ाते जाएं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया वे आधुनिक युग में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए जब भी शोध करें तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, पानी की उपलब्धता तथा गुणवत्ता, श्रमिकों की उपलब्धता, वर्षा, जमीन का

आर्गेनिक कार्बन, खरपतवार, पूरे साल का फसल चक्र, कीट तथा बीमारियों के प्रबंधन संबंधित बातों पर मंथन जरूर करें।

इस अवसर पर अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. राजेश कुमार गेरा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य सहित सहायक निदेशक डॉ. सुरेंद्र यादव भी उपस्थित रहे।

वाद्यसंपर्क ग्रुप में शेष प्रक्रिया करने के लिए विभिन्न संगोष्ठी का आयोजन

काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की समस्याओं को जानकर उनका हल करना व शेष कार्यों को उनके अनुरूप बनाना है। प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलवाने के लिए उपभोक्ताओं से सम्झौता व सीधे तर पर जुड़कर आपस में विश्वास पैदा करना जरूरी है। उन्होंने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से पाठ्यक्रम बनाना, अधिक से अधिक प्रशिक्षणों का आयोजन व कृषि मॉडल की प्रदर्शनी भी लगाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि किसान वाद्यसंपर्क ग्रुप बनाएं जिसमें वे अपनी समस्याएं व समाधान शेयर करें ताकि उसका तुरन्त एक दूसरे को लाभ पहुंच सके, साथ ही आपस में तकनीकों का भी आदान-प्रदान हो।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्मुखार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण।	३-५-२५	५	३-६

‘रसायनमुक्त भोजन उपलब्ध करवाना प्राथमिकता’

जागरण संगाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर. काम्बोज ने बैठक की अध्यक्षता की। बैठक में प्रबंधन मंडल के भूतपूर्व सदस्य सीपी आहुजा, शरद बतरा व शिवांग बतरा भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती कर रहे विभिन्न जिलों के प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की समस्याओं को जानकर उनका हल करना व शोध कार्यों को उनके अनुरूप बनाना है। कुलपति ने प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलावाने के लिए उपभोक्ताओं से सामंजस्य व सीधे तौर पर जुड़कर आपस में



कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी को संबोधित करते हुए विश्वास पैदा करना जरूरी है।

उन्होंने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से पाठ्यक्रम बनाना, अधिक से अधिक प्रशिक्षण का आयोजन व कृषक समुदाय द्वारा तैयार किए गए कृषि माडल की प्रदर्शनी भी लगाने पर जोर दिया। प्राकृतिक खेती कर रहे किसान व्हाट्सएप ग्रुप बनाए जिसमें वे अपनी समस्याएं व समाधान शेयर करें ताकि उसका तुरंत एक दूसरे को लाभ पहुंच सके, साथ ही आपस में तकनीकों का भी आदान-प्रदान हो।

उन्होंने बताया कि भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त व पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध

करवाना वैज्ञानिकों व किसानों की मुख्य प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि किसान शुरूआत में कम जगह पर प्राकृतिक खेती को अपनाएं और धोरे-धीरे उसका क्षेत्रफल बढ़ाते जाएं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया वे आधुनिक युग में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए जब भी शोध करें तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, पानी की उपलब्धता तथा गुणवत्ता, श्रमिकों की उपलब्धता, वर्षा, जमीन का आर्गेनिक कार्बन, खरपतवार, पूरे साल का फसल चक्र, कीट तथा बीमारियों के प्रबंधन संबंधित बातों पर मंथन जरूर करें। हकूमि में स्थापित पंडित दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र के निदेशक डा. अनिल कुमार ने विभिन्न विषयों पर चल रहे प्रयोगों के बारे में जानकारियां साझा की। प्राकृतिक खेती के तहत विभिन्न फलों प्रूफ संबिंद्यों पर शोध किए जा रहे हैं। इस अवसर पर अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डा. राजेश कुमार गेरा, मीडिया एडवाइजर डा. संदीप आर्य सहित सहायक निदेशक डा. सुरेन्द्र यादव, संयुक्त निदेशक डा. सुरेश कुमार, डा. सुमित देशबाल, डा. सुरेश कुमार, डा. किशोर कुमार, डा. दीपिका, मंजीत, सुधीर महता, सुभाष बेनीवाल, कमल वीर, पंकज माचरा, मुल्कराज चावला, सुरेन्द्र कुमार, राजेन्द्र कुमार, रणधीर सिंह, मनोज कुमार, सुरजभान, धर्मवीर पूनिया, सुरंजीत सिंह, नरेश कुमार, अमनदीप, वीरेन्द्र कुमार, कृष्ण, दलजीत सिंह, गौरव तनेजा, मुकेश कंबोज, आशीष व दिलेर भी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
‘अभूत’ उजाला	३१-५-२६	५	१-६

‘रसायन मुक्त भोजन उपलब्ध कराना प्राथमिकता’

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने पीटिंग की अध्यक्षता करते हुए प्राकृतिक खेती के विस्तार से लेकर संबोधित किया।

मार्ड सिटी रिपोर्टर
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने पीटिंग की अध्यक्षता करते हुए प्राकृतिक खेती के विस्तार से लेकर संबोधित किया।

उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की समर्थनों को जानकर उनका हल करना व शोध कार्यों को उनके अनुरूप बनाना है। कुलपति ने प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलायाने के लिए उपयोगात्मक संसाधनों व सीधे तौर पर जुड़कर आपस में विश्वास पैदा करना जरूरी है।

उन्होंने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से यात्रक्रम बनाया,



एचएयू में वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी को संबोधित करते कुलपति प्रो. बीआर कांबोज। शोत: संस्थान

अधिक से अधिक प्रशिक्षणों का आयोजन व कृषक समुदाय द्वारा तैयार किए गए कृषि मॉडल की प्रदर्शनी भी लगाने पर जोर दिया। प्राकृतिक खेती कर रहे किसान व्हाइटसप मुप्रबनाए जिसमें वे अपनी समस्याएं व समाधान शेयर करें ताकि

उसका तुरंत एक दूसरे को लाभ पहुंच सके साथ ही आपस में तकनीकों का भी आदान-प्रदान हो। उन्होंने बताया कि भावी पीड़ियों को रसायन मुक्त व पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाना विज्ञानिकों व किसानों की मुख्य

प्राथमिकता है। इसके लिए उन्होंने कहा कि किसान शुरुआत में कम जगह पर प्राकृतिक खेती को अपनाए और धीरे-धीरे उसका थ्रेफल बढ़ाते जाएं।

उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया वे आधुनिक युग में आने वाली समस्याओं

प्राकृतिक खेती के तहत विभिन्न फलों व सजियों पर हो रहा शोध

को ध्यान में रखते हुए जब भी शोध करें तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, पानी की उपलब्धता तथा गुणवत्ता, त्रिमिकों की उपलब्धता, वर्षा, जमीन का ऑर्गेनिक कार्बन, खरपतवार, पूरे साल का फसल चक्र, कीट तथा बीमारियों के प्रबंधन संबंधित बातें पर मंथन जरूर करें।

एचएयू में पहिले दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उक्सर्टा केंट के निदेशक डॉ. अनिल कुमार ने कहा कि प्राकृतिक खेती के तहत विभिन्न फलों एवं सजियों पर शोध किए जा रहे हैं। किसानों ने कहा कि प्राकृतिक खेती के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया को सरल बनाया जाए। इस अवसर पर अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. राजेश कुमार गेरा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्या आदि उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सन्धि मही	३०.५.२५	५	६-८

भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त भोजन उपलब्ध करवाने पर मंथन

■ हकृति में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए संगोष्ठी का आयोजन

सच कहूँ/संदीप सिंहमार। हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस मीटिंग की अध्यक्षता की। इस मीटिंग में प्रबंधन मंडल के भूतपूर्व सदस्य सी.पी.आहुजा, शरद बत्रा व शिवांग बत्रा भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती कर रहे विभिन्न जिलों के प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। कुलपति ने आधुनिक युग में प्राकृतिक खेती के विस्तार से लेकर उसकी महत्वता पर प्रकक्षण डाला। कुलपति ने प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलवाने के लिए उपभोक्ताओं से सामंजस्य व सीधे तौर पर जुड़कर आपस में विश्वास पैदा करना जरूरी है। उन्होंने कहा कि आधुनिक युग में



आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए जब भी शोध करें तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, पानी की उपलब्धता तथा गुणवत्ता, श्रमिकों की उपलब्धता, वर्षा, जमीन का आर्गेनिक कार्बन, खरपतवार, पूरे साल का फसल चक्र, कीट तथा बीमारियों के प्रबंधन संबंधित बातों पर मंथन जरूर करें। इस अवसर पर अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. राजेश कुमार गेगा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य सहित सहायक निदेशक डॉ. सुरेन्द्र यादव, संयुक्त निदेशक डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. सुमित देशवाल, डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. किशोर कुमार, संजय व दिलेह भी उपस्थित रहे।

फलों एवं सब्जियों पर शोध जारी

हकृति में स्थापित पडित दीनदयाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्टता केंद्र के निदेशक डॉ. अनिल कुमार ने विभिन्न विषयों पर चल रहे प्रयोगों के बारे में जानकारियां साझा की। साथ ही किसानों के सदालों के जवाब भी दिए। प्राकृतिक खेती के तहत विभिन्न फलों एवं सब्जियों पर शोध किए जा रहे हैं। अनुसंधानों के उचित परिणामों को किसानों तक पहुंचाया जा रहा है, जिससे वे प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए अधिक से अधिक जागरूक हो।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजगित समाचार	३०.५.२४	३	१-५

भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त भोजन उपलब्ध करवाना प्राथमिकता : प्रो. काम्बोज

हिसार, 2 अप्रैल (विरेन्द्र वर्मा): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस मीटिंग की अध्यक्षता की। इस मीटिंग में प्रबंधन मंडल के भूतपूर्व सदस्य सी.पी. आहुजा, शरद बत्रा व शिवांग बत्रा भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती कर रहे विभिन्न जिलों के प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने आधुनिक युग में प्राकृतिक खेती के विस्तार से लेकर उसकी महत्वता पर प्रकाश डाला।

उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की समस्याओं को जानकर उनका हल करना व शोध कार्यों को उनके अनुरूप बनाना है। कुलपति ने प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलवाने के लिए उपभोक्ताओं से सामंजस्य व



कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज वैज्ञानिक-किसान विचार-विमर्श संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए।

सीधे तौर पर जुड़कर आपस में विश्वास पैदा करना जरूरी है। उन्होंने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से पाद्यक्रम बनाना, अधिक से अधिक प्रशिक्षणों का आयोजन व कृषक समुदाय द्वारा तैयार किए गए कृषि मॉडल की प्रदर्शनी भी लगाने पर जोर दिया। प्राकृतिक खेती का रहे किसान व्हाट्सेप ग्रूप बनाए जिसमें वे अपनी समस्याएं व समाधान शेयर करें ताकि उसका तुरन्त एक दूसरे को लाभ पहुंच सके, साथ

ही आपस में तकनीकों का भी आदान-प्रदान हो।

उन्होंने बताया कि भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त व पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाना वैज्ञानिकों व किसानों की मुख्य प्राथमिकता है। इसके लिए उन्होंने कहा कि किसान शुरूआत में कम जगह पर प्राकृतिक खेती को अपनाए और धीरे-धीरे उसका क्षेत्रफल बढ़ाते जाएं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया वे आधुनिक युग में आने वाली

समस्याओं को ध्यान में रखते हुए जब भी शोध करें तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, पानी की उपलब्धता तथा गुणवत्ता, श्रमिकों की उपलब्धता, वर्षा, जमीन का आर्गेनिक कार्बन, खरपतवार, पूरे साल का फसल चक्र, कीट तथा बीमारियों के प्रबंधन संबंधित बातों पर मंथन जरूर करें। हक्की में स्थापित पंडित दीनदयाल

संगोष्ठी में किसानों का यह मत था कि प्राकृतिक खेती के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया को सरल बनाया जाए। इस अवसर पर अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. राजेश कुमार गेरा, मीडिया एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य सहित सहायक निदेशक डॉ. सुरेन्द्र यादव, संयुक्त निदेशक डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. सुमित देशवाल, डॉ.

सुरेश कुमार, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. दीपिका, मंजीत सहित प्रगतिशील किसान जिनमें सुधीर महता, सुभाष बेनीवाल, कमल बीर, पंकज माचरा, मुल्कराज चावला, सुरेन्द्र कुमार, राजेन्द्र कुमार, रणधीर सिंह, मोज कुमार, सुरजभान, धर्मवीर पूनिया, सुरजीत सिंह, नरेश कुमार, अमनदीप, वीरेन्द्र कुमार, कृष्ण, दलजीत सिंह, गैरव तनेजा, मुकेश कंबोज, आशीष महता, डॉ. बलविंदर सिंह, संजय व दिलेर भी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब एसरो	२०.५.२५	५	३-५

भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त भोजन उपलब्ध करवाना हमारी प्राथमिकता : प्रो. काम्बोज

हिसार, 2 अप्रैल (ब्लूरो) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-किसान विचार-विमर्श संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इसकी अध्यक्षता की। इस मीटिंग में प्रबंधन मंडल के भूतपूर्व सदस्य सी.पी.आहुजा, शरद बत्तरा व शिवांग बत्तरा भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती कर रहे विभिन्न जिलों के प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने आधुनिक युग में प्राकृतिक खेती के विस्तार से लेकर उसकी महत्वता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि

वैज्ञानिक-किसान विचार-विमर्श संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की समस्याओं को जानकर उनका हल करना व शोध कार्यों को उनके अनुरूप बनाना है। उन्होंने बताया कि भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त व पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाना वैज्ञानिकों व किसानों की मुख्य प्राथमिकता है। इसके लिए उन्होंने कहा कि किसान शुरुआत में कम जगह पर प्राकृतिक खेती को अपनाए और धीरे-धीरे उसका क्षेत्रफल बढ़ाते जाएं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आहवान किया वे आधुनिक युग में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए शोध करें।



वैज्ञानिक-किसान विचार-विमर्श संगोष्ठी को संबोधित करते कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	02.04.2024	--	--

भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त भोजन उपलब्ध करवाना प्राथमिकता: प्रो. काम्बोज

पल पल न्यूज़: हिसार, 2 अप्रैल। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने इस मीटिंग की अध्यक्षता की। इस मीटिंग में प्रबंधन मंडल के भूतपूर्व सदस्य सी.पी. आहुजा, शरद बतरा व शिवांग बतरा भी मौजूद रहे। कार्यक्रम



में प्राकृतिक खेती कर रहे विभिन्न जिलों के प्रगतिशील किसानों ने भाग लिया। कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने आधुनिक युग में प्राकृतिक खेती के विस्तार से लेकर उसकी महत्वता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक खेती कर रहे किसानों की समस्याओं को जानकर उनका हल करना व शोध कार्यों को उनके अनुरूप बनाना है। कुलपति ने प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलवाने के लिए उपभोक्ताओं से सामंजस्य व सीधे तौर पर जुँड़कर आपस में विश्वास पैदा करना जरूरी है। उन्होंने प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से पाठ्यक्रम

बनाना, अधिक से अधिक प्रशिक्षणों का आयोजन व कृषक समुदाय द्वारा तैयार किए गए कृषि मॉडल की प्रदर्शनी भी लगाने पर जोर दिया। प्राकृतिक खेती कर रहे किसान व्हाट्सेप रूप बनाए जिसमें वे अपनी समस्याएं व समाधान शेयर करें ताकि उसका तुरन्त एक दूसरे को लाभ पहुंच सके, साथ ही आपस में तकनीकों का भी आदान-प्रदान हो। उन्होंने बताया कि भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त व पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाना वैज्ञानिकों व किसानों की मुख्य प्राथमिकता है। इसके लिए उन्होंने कहा कि किसान शुरूआत में कम जगह पर प्राकृतिक खेती को अपनाए और धीरे-धीरे उसका क्षेत्रफल बढ़ाते जाएं। उन्होंने वैज्ञानिकों से आह्वान किया वे आधुनिक युग में आने वाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए जब भी शोध करें तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, पानी की उपलब्धता तथा गुणवत्ता, श्रमिकों की उपलब्धता, वर्षा, जमीन का आर्गेनिक कार्बन, खरपतवार, पूरे साल का फसल चक्र, कीट तथा बीमारियों के प्रबंधन संबंधित बातों पर मंथन जरूर करें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमृतधारा	03.04.2024	--	--

हकूमि में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए वैज्ञानिक-किसान विचार विमर्श संगोष्ठी का आयोजन

हिस्से, महेंद्र गोपल
चौथी चरण सिंह हायिणा कृषि
विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-क्रियान्
विचार विभाग सोसाइटी का अध्योजन
किया गया। विश्वविद्यालय के
कुलपति प्रौ. श्री आर. कामोद्धो जे ने
इस मीटिंग की अवश्यकता की। इस
मीटिंग में प्रबंधन मंडल के भूपुरुष
सदस्य सौ.पी. आहुजा, शरद अवरा
व शिक्षण बताए भी गौजूद रहे।
काव्यक्रम में प्राकृतिक खेत कर रहे
विभान्न ज़िलों के प्रभागिशील
किसानों ने भाग लिया।

कुलपति ग्रे. बी.आर. कायदोंज ने आधिकारिक बुग में प्राकृतिक खेतों के विस्तार से लेकर उसकी महत्वता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक-किसान विचार विषय संगठनों का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक खेतों का रहे किसानों की कृषि मॉडल को प्रदानी भी लगाने पर जोर दिया। प्राकृतिक खेतों कर रहे किसान व्यादासप धूप बनाएं जिसमें वे अपनी समझावाएं व समाजान शेवर करे ताकि उसका तुरन्त एक दूसरों को लाभ पहुंच सके, साथ ही आपस में तकनीकों

समस्याओं को आनंदकर ढनका हल करना व शोध कार्यों को उनके अनुरूप बनाना है। कुलालित ने प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों की बेहतर मूल्य दिलचारे के लिए उपभोक्ताओं से सामंजस्य व शोध तैयार कुदकर आपस में विश्वास पैदा करना चाहता है। उत्तरों प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से पाठ्यक्रम बनाया, अधिक से अधिक प्रशिक्षणों का आयोजन व कष्टक मध्यस्थ द्वारा तैयार किए गए

कृषि माइल की प्रदर्शनी भी लगाने पर जोर दिया। प्राकृतिक खेती कर रहे किसान व्हाइट्सप युप बनाएं जिसमें वे अपनी समाजाधारण और समाजान शेवर करते ताकि उसका तुलना एक दूसरे को लाए पंचुड़ सके, साथ ही अपस में तकनीकों



का भी आदान-प्रदान हो।
उन्होंने बताया कि वहाँ पीड़ियों की
रसायन मुक्त व पोषक तत्वों से
भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध
करवाना वैज्ञानिकों व किसानों की
मुख्य प्रार्थनिका है। इसके लिए
उन्होंने कहा कि वित्तान शुल्कों
में कम जगह पर प्राकृतिक खेतों को
अपनाया और धौंध-धौंध उसका

क्षेत्रफल घटाने जाए। उन्होंने वैज्ञानिकों से आहार किया वे आधुनिक युग में अनेक बाली समस्याओं को ध्यान में रखते हुए जब पी शंघ करें तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, पानी की उपलब्धता तथा गुणवत्ता, श्रमिकों की उपलब्धता, वर्षा, जमीन का आर्थिक व्यवर्थन, खरपतवार, पौर

पर शोध किए जा रहे हैं। अनुसंधानों के ठिकाने परिणामों को किसानों तक पहुँचाया जा रहा है, जिससे वे प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए अधिक से अधिक जागरूक हो। संगीते में किसानों का यह मत था कि प्राकृतिक खेती के प्रयोगान्वयन की प्रक्रिया को सरल बनाया जाए।

भाल का फलात चक्र, कोट तथा बीमारियों के प्रवृद्धन संबंधित वातों पर मंथन जरूर करें।

इस अवसर पर अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक डॉ. राजेश कुमार गोरा, भौद्धिक एडवाइजर डॉ. सदीप आर्य-

हक्काविं में स्थापित पीड़ित दीनदावाल उपाध्याय जैविक खेती उत्कृष्ट केंद्र के निरेशक डॉ. अस्तित कुमार ने विभिन्न विषयों पर चल रहे प्रयोगों के बारे में जानकारीया सझायी। साथ ही किसानों के सवालों के जवाब पीढ़ी दिया। प्राकृतिक खेती के तहत विभिन्न फलों एवं सब्जियों पर शोध किए जा रहे हैं। अनुसंधानों के ठिकाने परिणामों को किसानों तक पहुंचाया जा रहा है, जिससे वे प्राकृतिक खेती को अपनाने के लिए अधिक से अधिक जागरूक हो। संगीत थे किसानों का यह मत था कि प्राकृतिक खेती के प्रमाणीकरण की प्रक्रिया को सरल साहज सहायक निरेशक डॉ. सुरेन्द्र यादव, संतुक्त निरेशक डॉ. सुरेण्द्र कुमार, डॉ. सुपीत देशवाल, डॉ. सुरेण्द्र कुमार, डॉ. विजेश कुमार, डॉ. दीपिका, मंजूत सहित प्रगतिशील किसान जिनमें सुधीर महता, सुधाष बोनेवाल, कमल धौर, पंकज माधारा, भुल्कराज चावला, सुरेन्द्र कुमार, राजेन्द्र कुमार, रणधीर सिंह, मनोज कुमार, सुरजभान, धर्मवीर गूर्जना, सुरजीव सिंह, नरेश कुमार, अमनदीप, वीरेन्द्र कुमार, कृष्ण, छन्दोबीत सिंह, गौरव तनेजा, मुकेश कंदोज, आशीष महता, डॉ. बलविंदर सिंह, संजय चंद्रलेर वीरा उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	02.04.2024	--	--

भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त भोजन उपलब्ध करवाना प्राथमिकता : प्रो. काम्बोज

पाप को बूझ

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक-किसान विचार विमणी भागीदारी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज ने इस मीटिंग की आवश्यकता की। इस मीटिंग में प्रधानमंडल के भूतपूर्व सदस्य सी.पी. आरजा, सरद बत्ता व शिवांग यत्ता भी मौजूद रहे। कायोक्रम में प्राकृतिक खेतों का रहे विभिन्न जिलों के प्रांतिशील किसानों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. वी.आर. काम्बोज ने आयोजित युग में प्राकृतिक खेतों के विस्तार से लकड़ डम्बकी महत्वता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक-किसान विचार विमणी समोदीर्घी का मथा उद्देश्य प्राकृतिक खेतों का रहे किसानों की समस्याओं को जानकर उनका हल करना व शोध कार्यों को उनके अनुसूच बनाना है। कुलपति ने प्राकृतिक खेतों करने वाले किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलावाने के लिए



उपभोक्ताओं से सामंजस्य व सीधे तीर पर जुँड़कर आपस में विश्वास पैदा करना जरूरी है। उन्होंने प्राकृतिक खेतों को बढ़ावा देने के लिए विशेष रूप से पाठ्यक्रम बनाना, अधिक से अधिक प्रशिक्षणों का आयोजन व काष्ठक समूदाय द्वारा वैष्यार किए गए कृषि मंडल की प्रदर्शनी भी लगाने पर जोर दिया। प्राकृतिक खेतों का रहे किसान विस्तार

मुप बनाए जिसमें वे अपनी समस्याएं व समाधान शेयर करें ताकि उनका तुरन्त एक दृष्टि को लाभ पहुंच सके, साथ ही आपस में तकनीकों का भी आदान-प्रदान हो।

उन्होंने बताया कि भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त व व्योपक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराना वैज्ञानिकों व किसानों की मुख्य प्राथमिकता है। इसके

लिए उन्होंने कहा कि किसान शूल-आत में कम जागा पर प्राकृतिक खेतों को अपनाएं और पीर-धीरे उसका थेट्रिकल बढ़ावते जाए। उन्होंने वैज्ञानिकों से आवश्यन किया वे आधुनिक युग में आने वाली समस्याओं को ज्ञान में रखते हुए जब भी शोष करे तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों, पानी की उपलब्धता तथा गुणवत्ता, अमिकों की उपलब्धता, वाणी, जीवीन का आयोजित काबून, खुरपत्तावा, परे साल का फसल चक्र, कीट तथा वायारियों के प्रबंधन संबंधित बातों पर ध्येय जरूर करें।

हावी में स्थापित पहिल वैनिकाल उपायां जैविक खेतों उत्कृष्टता केंद्र के निदेशक डॉ. अमिल कुमार, गोपीनाथ एडवाइजर डॉ. संदीप आर्च, सहायक निदेशक डॉ. सुरेन्द्र यादव, संयुक्त निदेशक डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. सुमित दशबाल, डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. दीपिका, योगीता सहित प्राथमिकता किसान जिनमें सुधीर महता, सुभाष बैनीवाल, कमल वार, एकज मालार, मुख्यराज चाक्कला, सुरेन्द्र कुमार, योगेन्द्र कुमार, रणधर रिह, मनोज कुमार, सुरजभान, धर्मेन्द्र पुरिया, सुरजीत सिंह, नरेश कुमार, अमनदीप, योगेन्द्र कुमार, कृष्ण, दलजीत सिंह, गोवर्धन तनेजा, मुकेश कंदोज, आशीष महला, डॉ. बलविंदर सिंह, संजय व दिलो

भी उपस्थित रहे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	02.04.2024	--	--

भावी पीढ़ियों को रसायन मुक्त भोजन उपलब्ध करवाना प्राथमिकता : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरिदाणा न्युज़

हिसार, 2 अप्रैल। चौथरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में बैज्ञानिक-किसान विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कृषिपति प्रो. यो.आर. काम्बोज ने इस मैटिंग अध्यक्षता की। इस मैटिंग में प्रबंधन मंडल के भूतपूर्व समस्या मी.पी. आहुजा, समर्द वर्तम व विश्वाग्रही भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्राकृतिक खेती कर रहे विभिन्न जिलों के प्रगतिशील किसानों ने भाग कृषिपति प्रो. यो.आर. काम्बोज ने आधुनिक युग में प्राकृतिक खेती के विस्तार से सेवक उम्मीदों में पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बैज्ञानिक-किसान विचार विरस्त संगोष्ठी का मुख्य उद्देश्य प्राकृतिक कर रहे किसानों की समस्याओं को जानकर उनका हल करना व शोध कार्यों को उनके अनुरूप बना कृषिपति ने प्राकृतिक खेती करने वाले किसानों के उत्पादों को बेहतर मूल्य दिलवाने के लिए उपभोक्ता से सायंज्ञव व सांखें तौर पर जुटे। आपस में विश्वास पैदा करना जरूरी है। उन्होंने प्राकृतिक खेती विद्यावाद देने के लिए विशेष रूप से पादव्यक्रम बनाया, अधिक से अधिक प्रशिक्षणों का आयोजन व सम्पूर्ण द्वारा तैयार किए गए कृषि रॉडिल की प्रशिक्षनी भी लागाने पर जोर दिया। प्राकृतिक खेती व किसान ब्लादसेप ग्रन्थ बनाए जिसमें वे अपनी समस्याएं व समाधान शेयर करें ताकि उसका तुलन एक को साप घंटव सक, साथ ही आपस में तकनीकों का भी आदान-प्रदान हो। उन्होंने बताया कि भावी व को रसायन मुक्त व पोषक तत्वों से भरपूर खाद्य पदार्थ उपलब्ध करवाना बैज्ञानिकों व किसानों की प्रार्थनीकरता है। इसके लिए उन्होंने कहा कि किसान शुरुआत में कम जगह पर प्राकृतिक खेती को उओं और धीरे-धीरे उसका क्षेत्रफल बढ़ाते जाए। उन्होंने बैज्ञानिकों से आहान किया वे आधुनिक युग में बातें समस्याओं को ज्ञान में रखते हुए जब भी शोध करें तो विभिन्न प्राकृतिक संसाधनों पर उपलब्धता तथा गुणवत्ता, श्रमिकों की उपलब्धता, वर्षा, जर्मन का आरोग्यिक कार्बन, खुशखबर, पूर्ण का फसल बच, कौट तथा बीमारियों के प्रबंधन संवर्धित बातों पर मर्यादन जरूर करें। हक्की में स पैंडिट दीनदायाल उपाध्याय वैज्ञानिक खेती जल्दीता के लिए उन्हें बड़ा अनिल कमार ने विभिन्न विध



कर रहे प्रयोगों के द्वारा मैं जानकारियां साझा करौं। साथ ही किसानों के सवालों के जवाब भी दिए। प्राकृतिक खेतों के तहत विभिन्न फलों एवं सब्जियों पर शोध किए जा रहे हैं। अनुसंधानों के दौरंत परिणामों को किसानों तक पहुंचाया जा रहा है, जिससे वे प्राकृतिक खेतों को अपनाने के लिए अधिक से अधिक जागरूक हों। समाजी में किसानों का यह मत था कि प्राकृतिक खेतों के प्रयापीकरण की प्रक्रिया को माल बनाया जाए। इस अवसर पर आंतरिक अनुसंधान निदेशक डॉ. रावेश कुमार गोरा, मार्डिला एडवाइजर डॉ. संदीप आर्य सहित सहायक निदेशक डॉ. सुरेन्द्र यादव, संस्कृत निदेशक डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. सुमित देवशाल, डॉ. सुरेश कुमार, डॉ. किशोर कुमार, डॉ. दीपिका, मंजूषा सहित प्राविधिकीय किसान जिनमें सुधौर महता, सुभाष बर्नीवाल, कमल धीर, रंकेज माचारा, मुल्काहज चावला, सुरेन्द्र कुमार, रावेन्द्र कुमार, रणधीर सिंह, भगवाज कुमार, सुरजभान, धर्मदीर्घ धूनिया, सुरजीत सिंह, रंजेश कुमार, अमनदीप, बांसुर्द कुमार, कृष्ण, दलजीत सिंह, गारव तनजा, मुकेश कंबोज, आशीष महता, डॉ. बलविंदर सिंह, संजय व दिलेख भी उपस्थित रहे।